



Journal of Religion & Film

Volume 20

Issue 1 *The 2015 International Conference on Religion
and Film in Istanbul*

Article 24

6-15-2017

Films and Religion: An Analysis of Aamir Khan's PK (Hindi translation)

Monisa Qadri

Islamic University of Science and Technology, Jammu and Kashmir, India, monisa.qadri@islamicuniversity.edu.in

Sabeha Mufti

MERC University of Kashmir, J & K, India, sabehamufti@yahoo.com

Recommended Citation

Qadri, Monisa and Mufti, Sabeha (2017) "Films and Religion: An Analysis of Aamir Khan's PK (Hindi translation)," *Journal of Religion & Film*: Vol. 20 : Iss. 1 , Article 24.

Available at: <https://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/24>

This Article is brought to you for free and open access by DigitalCommons@UNO. It has been accepted for inclusion in Journal of Religion & Film by an authorized editor of DigitalCommons@UNO. For more information, please contact unodigitalcommons@unomaha.edu.

UNIVERSITY OF
Nebraska
Omaha

Films and Religion: An Analysis of Aamir Khan's PK (Hindi translation)

Abstract

This is a Hindi translation of an essay that also appears in this issue in English. The translation is by Pritam Katoch.

Every year, the Indian film industry produces the highest number of films in the world and also figures at the top position for ticket sales, but that does not make the society completely tolerant of how different issues are represented in films. That is a question which PK (2014), the biggest Bollywood grosser of all times, raised. This satirical comedy is based on challenging the superstitions labelled as religious practices in Indian society. India, being home to multiple religions and a diverse cultural fabric, supports many layers of understanding about faith, religion, rituals, and beliefs, which form a sensitive issue. The film delves headfirst into the syncretic melee of different faiths in India and it takes direct aim at 'godmen,' the guru figures who direct the followers towards following symbols of religion. Hindu groups have been considering it as a blasphemy against Hindu gods and gurus, because of which the film has had to plunge into controversies. There have been protests and attacks. A 'boycott-PK' movement as well as a parallel 'Support-PK' trend have been seen in the real as well as virtual world. It becomes all the more interesting to see the depiction of religion in this film, using strong narratives along with visual representations to deal with the issue of faith. Also, the timing of the film coincided with the prevailing atmosphere of religious intolerance within India. The series of events regarding religion in the Indian society lend a meaning to a study on this film as a mediated reality of Indian society. The study will conduct a qualitative analysis of the film and present a reading of this popular media form.

Keywords

India, Bollywood, PK film, portrayal of Religion, Ghar Wapsi, Aamir Khan

Author Notes

Monisa Qadri is an Assistant Professor of Journalism & Mass Communication at Islamic University of Science and technology, J&K (India). She has also been the Head of the department for more than 3 years. She teaches Courses on Public Relations and Corporate Communication, Advertising, Media in Conflict and Peacebuilding, Writing for Media, Presentation and Communication Skills. She has worked as a professional narrator, and has directed and produced short films and documentaries besides having presented papers at various international and national forums both within and outside India. She is currently pursuing her Ph.D.

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म

वॉल्यूम-20

इशू-1, दी 2015 इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन रिलिजियन एंड फिल्म इन इस्ताम्बुल आर्टिकल-9

1-4-2016

फ़िल्में और मज़हब:आमिर खान की फिल्म PK एक जायजा !

मोनिसा कादरी

इस्लामिक यूनिवर्सिटी ऑफ साइंन्स एंड टेक्नोलॉजी, जम्मू एंड कश्मीर, इंडिया !

monisa.qadri@islamicuniversity.edu.in

साबेह मुफ़्ती

MERC यूनिवर्सिटी ऑफ कश्मीर, जम्मू एंड कश्मीर, इंडिया !

sabehamufti@yahoo.com

रेकोममेंडेड साइटेशन

कादरी, मोनिसा एंड मुफ़्ती साबेह (2016) “फिल्मस एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान’स PK” जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

ये लेख DigitalCommons@UNO द्वारा स्वतंत्र और खुली पहुँच के लिए यहाँ प्रस्तुत किया गया है ! DigitalCommons@UNO के एक अधिकारिक प्रशासक द्वारा इसे धर्म और फिल्म पत्रिका में शामिल करने के लिए स्वीकार किया गया है ! अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

unodigitalcommons@unomaha.edu.

फ़िल्में और मज़हब-आमिर खान की फिल्म PK एक जायजा !

सारांश

हर साल भारतीय फिल्म उद्योग दुनियां भर में सबसे ज्यादा फिल्में तयार करता है और टिकटों की बिक्री के मामले में भी सब से ऊपर रहता है ! मगर ये सब समाज को इस बारे में पूरी तरह से इस बारे सहनशील नहीं बनाता है कि फिल्मों में किस तरह से अलग-अलग मुद्दों को प्रस्तुत किया जाता है ! यही वो सवाल है जो बालीवुड की उस वक़्त तक की सबसे ज्यादा दर्शकों को अपनी तरफ खींचने वाली PK फिल्म ने उठाया ! हास्य-व्यंग्य वाली ये फिल्म उस अन्धविश्वास को चुनौती देने वाले विषय पर आधारित है जिन्हें भारतीय समाज में धार्मिक रीति-रिवाज के नाम पर निभाया जाता है ! भारत, मुख्तलिफ धर्मों को मानने वाला देश है और यहाँ का विविध सांस्कृतिक ढाँचा, अलग-अलग विश्वास. मज़हबों, रीति-रिवाजों और आस्थाओं, का समर्थन करने वाला है जो इस मामले को संजीदा बना देता है ! ये फिल्म मौजूदा दौर में भारत के अन्दर अलग-अलग आस्थाओं के दरमियाँन चल रही खींचातानी को कुरेदते हुए भगवान् बने उन गुरुओं पर सीधा निशाना साधती है जो अपने शिष्यों को धार्मिक परम्पराओं पर चलने की हिदायत देते हैं ! हिन्दू संगठनों ने इसे हिन्दू भगवानों और गुरुओं का अपमान माना जिस वजह से ये फिल्म विवादों में उलझ गयी ! कई जगह प्रदर्शन हुए और हमले भी ! PK फिल्म के बहिष्कार और समर्थन में वास्तविक और परोक्ष रूप में समान्तर मुहीम सामने आई ! इस फिल्म में विश्वास से जुड़े मुद्दों को सशक्त कहानी और दृश्यों के ज़रिये जिस तरह से पेश किया गया है वो बड़ा ही दिलचस्प है ! इसके इलावा फिल्म रिलीज़ होने का समय उस दौर में भारत के अन्दर जारी

मज़हबी असहनशीलता के दौर से पूरी तरह जुड़ गया ! मज़हब के बारे भारतीय समाज में सिलसिलेवार होने वाली घटनाओं ने इस फिल्म, जो भारतीय समाज के बीच की एक सचाई है, पर अध्ययन को एक मायने दे दिए हैं ! इस अध्ययन में फिल्म के गुण-दोष सम्बन्धी सभी पहलुओं का जायजा लेकर मीडिया के इस लोकप्रिय रूप के बारे एक ब्यौरा पेश किया जाएगा !

कुंजी शब्द

इंडिया, बालीवुड, PK फिल्म, पोर्ट्रेयाल ऑफ रिलिजन, घर वापसी, आमिर खान !

ऑथर नोट्स

मोनिसा कादरी, असिस्टेंट प्रोफेसर ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन एट इस्लामिक यूनिवर्सिटी, जम्मू-कश्मीर (इंडिया) ! वो तीन बरस से ज्यादा देर तक विभाग की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं ! वो पब्लिक रिलेशन और कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन, एडवर्टाइजिंग, मीडिया इन कॉन्फ्लिक्ट एंड पीस-बिल्डिंग पढ़ाती हैं ! मीडिया, प्रेजेंटेशन, एंड कम्युनिकेशन स्किल्ज़ के लिए लिखती हैं ! उन्होंने व्यावसायिक तौर पर नैरेटर का काम भी किया है और शार्ट फिल्मज़ और डाक्युमेंटरीज़ प्रोड्यूस एंड डायरेक्ट करने इलावा भारत और विदेशों में कई इंटरनेशनल एंड नेशनल फोरम में पेपरस प्रेजेंट किये हैं ! वो इस समय PhD भी कर रहीं हैं !

ये लेख रिलिजन एंड फिल्म पत्रिका में उपलब्ध है जिसकी वेब साइट इस प्रकार है <http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी और मुफ्ती ; फ़िल्में और मज़हब आमिर खान की फिल्म PK का एक जायजा !

भारतीय फिल्म उद्योग और धर्म पर स्क्रीन कथाएं !

अगर साल भर में तयार की जाने वाली फिल्मों की गिनती की बात करें तो भारतीय फिल्म उद्योग दुनिया में सबसे बड़ा है, और कई सालों से दुनिया में सबसे ज्यादा फिल्में तयार करने वाला मुल्क बना हुआ है जहां मुख्तलिफ़ ज़बानों में फिल्में बनाई जाती हैं ! टिकट बिक्री के हिसाब से भी भारत का नम्बर सबसे ऊपर है जहाँ फिल्म देखने वाले व्यापक और लगातार बढ़ते शहरी लोग फिल्म संस्कृति और इसके विस्तार को समर्थन देते हैं ! (वाडिया, 2008).

इस बात से मुल्क में फिल्मों के इर्द-गिर्द बने उत्साह का पता चलता है ! भारत में फिल्मे बनाने की शुरुआत तकरीबन दुनियां के बाकी मुल्कों के साथ ही 1896 में ही हुई ! (मजमुदार 2007)

आजादी के कुछ बरसों के बाद भारतीय सिनेमा मुल्क के बाहर रूस, मध्य एशिया और लातिनी अमरीका के दर्शकों तक पहुँचने लगा ! बम्बई सिनेमा जो बालीवुड के नाम से मशहूर है भारत में सबसे बड़ा क्षेत्र है जिसके बाद तमिल और तेलुगु का सिनेमा है ! यहाँ की फिल्मे सामाजिक, सियासी, धार्मिक और आर्थिक कठिनाइयों की पृष्ठभूमि में, बड़े ख़ास अंदाज़ में प्यार और रोमांस के इर्द-गिर्द बुनी जाती हैं ! फिल्मी कथा का धर्म एक ज़रूरी पहलु है और किरदार, जगहें, कहानी, संवाद सामाजिक नियम, शादी-ब्याह, रीति-रिवाज, शादी-ब्याह से जुड़े सामाजिक संस्थान, शिक्षा वगैरह के ज़रिये उन धार्मिक मान्यताओं और विषयों को पेश किया जाता है जिन पर आम तौर पर फिल्म आधारित होती है ! आज के समाज में धर्म की भूमिका इतनी बड़ी हो गयी है कि फिल्मों में उसे जगह दिया जाना कोई हैरानी की बात नहीं ! (बार्टन 2010) !

भारत विभिन्न धर्मों का देश है ! हिंदू धर्म से बहुसंख्यक तबके की आस्था जुड़ी है जो 2011 की जनगणना के अनुसार देश में 78.35 फीसदी हैं ! इस लिए मुख्य तौर पर पेश किये जाने वाला यां धार्मिक सम्बन्ध में सबसे ज्यादा उपदेश यां बातचीत में आने वाला धर्म, हिन्दुधर्म ही है ! शुरुआती दौर की ज्यादातर फिल्मों और उस समय के रंगमंचीय नाटकों के प्लॉट, धर्म और मिथकों पर ही आधारित होते थे ! मूक फिल्मों के दौर की फिल्मों में विशेष थी 1913 में दादा साहेब फाल्के की बनाई हुई फिल्म “सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र” !

1. 2011 की धार्मिक जनगणना को कई तरह की मांग और आशंकाओं को देखते हुए सार्वजनिक नहीं किया गया है ! अबंतिका घोष, विजयता सिंह, “जनगणना: हिन्दू हिस्सेदारी 80 प्रतिशत से नीचे आई मुस्लिम प्रतिशत में बढ़ौतरी लेकिन धीमी ” “दा इंडियन एक्सप्रेस” 24 जनवरी, 2015 www.indianexpress.com/article/india/india-others/census-hindu-shere-dips-below-80-muslim-share-grows-but-slower/

कादरी और मुफ़्ती ; फ़िल्में और मज़हब आमिर खान की फिल्म PK का एक जायजा !
प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2016 (राव एंड राघवन 1996).

महाभारत पर आधारित ये फिल्म, सम्मान, बलिदान और महानता के कार्य से सम्बंधित भावपूर्ण थी ! उसके बाद से मिथकों पर आधारित कई फ़िल्में बनाई गयीं और भारत में उनकी बाढ़ से आ गयी ! (वाडिया 2008).

भारत में और भारत बारे बनने वाली फिल्मों में हिन्दू विषय सामान्य है हालांकि इन फिल्मों में हिन्दुवाद बारे अपनाया गया व्यवहार अलग-अलग होता है ! एक तरफ ऐसी फिल्मों के अनगिनत उदहारण हैं जिनमे पारम्परिक हिन्दू मूल्यों की पुष्टि की बात की जाती है, उनमे थोड़ी सी समीक्षा बड़े खास अंदाज़ में समाहित होती है ! उदहारण के तौर पर भक्ति और मिथकों पर आधारित भारतीय फिल्मों का इतिहास है की उनमे हिन्दू मान्यताओं के सामने खड़ी चुनौतियों को बहुत थोड़ी जगह दी गयी है ! (बुर्टोन 2013).

फिर भी दूसरी तरफ धार्मिक फिल्मों के निर्माण का ये लम्बा और निरंतर चलने वाला सिलसिला फिल्मों में विश्वास और धर्म की प्रस्तुति के बारे में समाज को पूरी तरह से सहनशील नहीं बनाता है !

भारत में धार्मिक संवेदनाएं और धर्म पर बनी फिल्मों पर विवाद !

भारत में धर्म एक बड़ा ही नाज़ुक मामला है ! धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचने और असहनशीलता की सम्भावना अधिक रहती है जो मज़हबी बैर-विरोध के रूप में नज़र आती है और जिस कारण होने वाले मज़हबी दंगों में सैंकड़ों-हज़ारों लोग मारे जाते हैं !

इसलिए बात चाहे शैली की हो, समाचार हों, प्रचार हो यां फिर सिनेमा की हो मीडिया में धर्म और धार्मिक मान्यताओं को बड़ी सावधानी से पेश किया जाता है ! फिल्मों में विवाद वाली धार्मिक प्रस्तुति के खिलाफ दंगे होने और असहनशील बर्ताव बारे भारत का इतिहास रहा है, जिसमे 2014 में रिलीज़ हुई PK (पी० के०) ताज़ा मामला है ! इन विवादों पर PK फिल्म सबसे ज्यादा चर्चित रही है मगर ये

अकेली नहीं ! फिल्में जिन्हें पिछले कुछ समय में धमकियों का सामना करना पड़ा !

1947 में मुल्क के बंटवारे के दौरान 1948 में पच्छमी बंगाल में हुए दंगों के बाद से 1969 में गुजरात में, 1979-80 में उत्तर प्रदेश में, 1989 में बिहार में, 1992 में बाबरी मस्जिद गिराए जाने, 1993 में बम्बई में, 2002 में गुजरात में और 2013 में मुजफ्फरनगर में भारत, मज़हबी फसाद देख चुका है ! भारत में 1947 के बाद हुई धार्मिक घटनाएँ और दंगों पर रिपोर्ट देखें !

‘Chronology of communal violence in India,’ Hindustan Times, 9 Nov. 2011,
<<http://www.hindustantimes.com/archives/chronology-of-communal-violence-in-india/article1-8038.aspx>> एंड

रणप्रीत,

‘Seven deadliest riots that shook India,’ India Tv News, 12 Nov. 2014,
<<http://www.indiatvnews.com/news/india/seven-deadliest-riots-that-shook-india-27728.html> page=3>

Journal of Religion & Film, Vol. 20 [2016], Iss. 1, Art. 9

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

और भी ऐसी कई फिल्में हैं, जिनमें ज्यादातर हिंदी हैं, जिन्हें विवादित होने, धार्मिक भावनाओं, धार्मिक प्रतीकों, धार्मिक विधियों और आचरण को ठेस पहुंचाने के नाम पर अलग-अलग धार्मिक संगठनों, ग्रुपों, और वर्गों की तरफ से आक्रोश का सामना करना पड़ा !

(“आमिर खान की पी० के०”, टाइम्स ऑफ़ इंडिया 2014).

साम्प्रदायिक दंगों को उजागर किये जाने के कारण “बाम्बे” फिल्म (1995) भारी विवादों के घेरे में आ गयी ! जबकि समलैंगिक जैसे वर्जित विषय पर, उस दौर में बात करने वाली दीपा मेहता की फिल्म “फायर” (1996), जिस दौर में सार्वजनिक सतह पर इसकी चर्चा भी नहीं की जा सकती थी, को एक हिन्दू विचारधारा वाली पार्टी शिव सेना की तरफ से इस फिल्म को हिन्दू विरोधी और हिन्दू धर्म की खिलाफवर्जी करने वाली बताया गया ! शिव सेना ने सैफ अली खान और करीना कपूर अभिनीत फिल्म “कुर्बान” के पोस्टर पर भी ये कहते हुए एतराज़ जताया कि

इसमें करीना की पीठ नंगी दिखाई गयी है और शाहरुख खान और काजोल अभिनीत करण जोहर की फिल्म “माई नेम इज़ खान” अपनी रिलीज़ से पहले ही शिवसेना की वजह से उस वक़्त विवादित बन गयी जब शाहरुख खान ने IPL यानी इंडियन प्रीमियर लीग-एक क्रिकेट टूर्नामेंट में पाकिस्तानी क्रिकेट खिलाड़ियों के ना खेलने पर एक ब्यान दिया ! नतीजे में सिनेमा हाल और बुकिंग सेंटर पर हमले किये गए !

मेहता की फिल्म वाटर (2006) को भी हिन्दू राष्ट्रवादी ग्रुपों का इसलिए विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि इस फिल्म को हिन्दू संस्कृति और धर्म का अपमान और विरोध करने वाली माना गया ! (बर्टन, 2013).

वाटर फिल्म विधवाओं का मुद्दा उठाने की वजह से समकालीन भारत में हिन्दू राष्ट्रीय राजनितिक और सांस्कृतिक ग्रुपों के प्रभाव के कारण सुनियोजित प्रचारित प्रदर्शनों का निशाना बन गयी और इसे अपमान का सामना भी करना पड़ा ! (Nicy, 2014).

परज़ानिया (2007) और नंदिता दास की फ़िराक़ (2008) पर गुजरात में इस लिए पाबन्दी लगा दी गयी क्योंकि इसमें बदले की भावना वाले 2002 के साम्प्रदायिक दंगो से प्रभावित परिवारों को प्रदर्शित किया गया था ! (“Not Just Vishwaroopam,” Firstpost.com, 2013), जोधा अकबर (2008) का विरोध विश्व हिन्दू परिषद् की तरफ से किया गया, इस दायें बाजू के अतिवादी संगठन ने हिन्दू जनजागृति संगठन के साथ मिलकर ओह माय गॉड (2012) का विरोध किया क्योंकि उनके मुताबिक़ ये फिल्म सदियों पुराने रीति-रिवाजों और आस्थाओं पर एक हमला था !

3. PK फिल्म पर हाल की विरोधी लहर के बाद भारत में धर्म के बारे विचारों की आजादी के विषय पर कई बहस हो चुकी हैं !

देखें Nicy V.P, आमिर की PK, कमल की, विश्वरूपम और दूसरी फ़िल्में जिन्हें धार्मिक कट्टरपंथियों की धमकियों का सामना करना पड़ा !

IBTimes, 31 Dec. 2014 <http://www.ibtimes.co.in/aamirs-PK-kamals-vishwaroopam-other-films-thatfaced-threats-religious-fanatics-618916>

4. शिवसेना महाराष्ट्र की एक हिन्दू राष्ट्रवादी पार्टी है जिसे एक अतिवादी पार्टी समझा जाता है ! अपने चार दशकों के इतिहास में इसके ऐसे कई प्रोग्राम हुए हैं—पार्टी ने शुरुआत पहले दक्षिण भारतीयों को शहर से बाहर निकल जाने की बात कहकर की, फिर कुछ समय के लिए गुजरातियों की यही कहना शुरू किया, और फिर ये हिंदुत्व को उभारने वाली एक आक्रमक मुस्लिम विरोधी पार्टी बन गयी और जो अब उत्तर भारतीयों, जिन्हें बिहारी और उत्तर प्रदेशी कहा जाता है का विरोध कर रही है ! (भाटिया, 2010)

दशावतार फिल्म (2008) पर एक और दायें बाजू के संगठन हिन्दू मक्कल कत्ची ने हिन्दूओं की भावनाओं को भड़काने के नाम पर हमला किया ! संजय लीला बंसाली की गलियों की रासलीला: राम लीला (2013) पर, जब अदालत ने शुरुआत में इसकी रिलीज़ पर पाबंदी लगा दी तो ये हिन्दू ग्रुपों के साथ विवाद में फस गयी ! दूसरे धार्मिक ग्रुपों ने भी कई फिल्म बनाने वालों को अपन निशाना बनाया है ! सिख ग्रुपों ने ये इलज़ाम लगाते हुए “जो बोले सो निहाल (2005)” क्र विरुद्ध विरोध प्रदर्शन किया कि इसमें सिख तबके को अपमान जनक तरीके से पेश किया गया है ! कमल हसन की फिल्म “विश्वरूपम (2013)” को उस समय पाबंदी के खतरे का सामना करना पड़ा और रिलीज़ में भी समस्या का सामना करना पड़ा जब तमिलनाडु मुन्नेत्र कड़गम नामक एक मुस्लिम संगठन ने दावा किया कि फिल्म में मुस्लिम तबके को आतंकवादियों के ग्रुप की तरह पेश किया गया है ! जबकि मणिरत्नम की फिल्म “कदल (2013)” को अलग-अलग इसाई संगठनों की धमकियों और विरोध का सामना करना पड़ा ! क्रिस्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी ने ऐसे कुछ दृश्यों को फिल्म से निकाले जाने की मांग की जिनके बारे में उनका दावा था कि वो इसाई तबके लिए एतराज़ वाले हैं ! (Nicy, 2014)

PK और इसकी रिलीज़ का नाज़ुक समय !

राजकुमार हिरानी निर्देशित और आमिर खान अभिनीत इस फिल्म पर पाबंदी लगाए जाने की मांग करने वाले अलग-अलग धार्मिक संगठनों का इलज़ाम है कि इसमें हिन्दू भावनाओं के ठेस पहुंचाई गयी है ! (“Increasing Hindu Protest,”

hinduexistence.org,2014). इसके रिलीज़ होने के समय पर बलात्कार और क़त्ल के इलज़ाम में प्रमुख धर्मगुरुओं की गिरफ्तारी के साथ ज़बरी धर्मपरिवर्तन के विषय ख़बरों में छाये हुए थे (पांडे, 2014) ! साथ ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (RSS), विश्व हिन्दू परिषद् (VHP), हिन्दू संहति, हिन्दू जागरण मंच और भारत सेवाश्रम संघ जैसे हिंदूवादी ग्रुपों द्वारा मुस्लिम और ईसाईयों के खिलाफ (Mezzofiore, 2014) शुरू की गयी *घर वापसी* (हिन्दू अतिवादियों द्वारा जबरन फिर से हिन्दू बनाना) मुहीम, “लव-जिहाद” (मुस्लिम लड़के से हिन्दू लड़की की शादी को लव जिहाद बताना !) और “*बहु लाओ-बेटी बचाओ*” (हिन्दू लड़कियों की गैर-हिन्दू से शादी रोकना उसके बजाये उनकी बेटियों से शादी की कोशिश करना) ! ये फिल्म एक विवादपूर्ण दौर में सामने आई !

5. *PK* फिल्म सबसे ज्यादा चर्चित फिल्म के रूप में सामने आई और शायद फिल्म बारे होने वाले प्रदर्शन भी इसकी एक बहुत बड़ी वजह थे और घरेलु सतह पर इसके रिकार्ड तोड़ प्रदर्शन के कारण भारतीय सिने उद्योग की सबसे ज्यादा कमाई वाली फिल्म बनने के इलावा इसने क्रिसमिस पर दूसरे खान की रिलीज़ एक्शन फिल्म 2013 की “*धूम 3*” को मुल्क की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों की फेहरिस्त में दूसरे नंबर पर धकेल दिया ! (भूषण, 2015) !

जैसा की फिल्म विश्लेषक नम्रता जोशी का कहना है की आमिर एक सुपरस्टार हैं इस वजह से ये फिल्म करोड़ों तक पहुँची ! इसने लोगों में सोच पैदा की है ! इस से पहले की बालीवुड फिल्मों और कई क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों में धर्म पर चर्चा की गयी है लेकिन इस बार आमिर की मौजूदगी ने अंतर पैदा किया है ! (एज साईटेड इन पांडे, 2014) !

PK को आक्रमक प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा !

फिल्म के संवेदनशील विषय को देखते हुए कुछ धार्मिक ग्रुपों ने *PK* के खिलाफ प्रदर्शन किये और यहाँ तक की कुछ सिनेमा घरों के बाहर गुंडा-गर्दी भी की, पाबंदी

की मांग करते हुए अदालतों में कई मामले दर्ज करवाए ! मगर भारत की सुप्रीम कोर्ट ने सबको दर-किनार कर दिया, क्योंकि फिल्म को मुल्क के सेंसर बोर्ड ने रिलीज़ के लिए अपनी मंजूरी दे दी थी (भूषण (2015) ! रिलीज़ से पहले ही इसको निशाना बनाया गया ! विश्व हिन्दू परिषद् (VHP) ने इस पर पाबंदी की मांग की और इसके सदस्यों ने बजरंग दल (हिंसा और दमन के मामलों अक्सर शामिल रहने वाला एक और हिंदूवादी गुप) के सदस्यों के साथ मिलकर फिल्म के पोस्टर फाड़ दिए और फिल्म प्रदर्शन को रोकने की कोशिश की ! विश्व हिन्दू परिषद् के प्रवक्ता विनोद बंसल के मुताबिक इसका कारण फिल्म *PK* में हिन्दुधर्म का मज़ाक उड़ाया जाना है !

5. 2014 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद से हिन्दू संगठनों, जैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद् वगैरह न कई कार्यक्रम शुरू किये हैं जिनसे साम्प्रदायिक हालात खराब हुए हैं ! इनमें शामिल हैं “घर वापसी”, “लव जिहाद विरोधी” और साक्षी महाराज जैसे भाजपा के चुने गए सदस्यों की तरफ से दिए गए साम्प्रदायिक ब्यान ! सी “आफ्टर “घर वापसी” एंड “लव जिहाद”, हिन्दू रेडिकल गुप्स स्टार्ट “बहु लाओ, बेटी बचाओ” प्रोग्राम इन बंगाल ! *इंडिया टीवी न्यूज़* 13 मार्च 2015,

<http://www.indiatvnews.com/news/india/hindu-radical-groups-start-bahu-lao-beti-bachao-programme-in-wb-48466.html>

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2016 (राव एंड राघवन 1996).

आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्यों ने भी सेंसर बोर्ड से मांग की कि साम्प्रदायिक सदभाव बनाए रखने के हित को देखते हुए फिल्म से कुछ सीन हटा दिए जाएँ ! (रंगन, 2015)

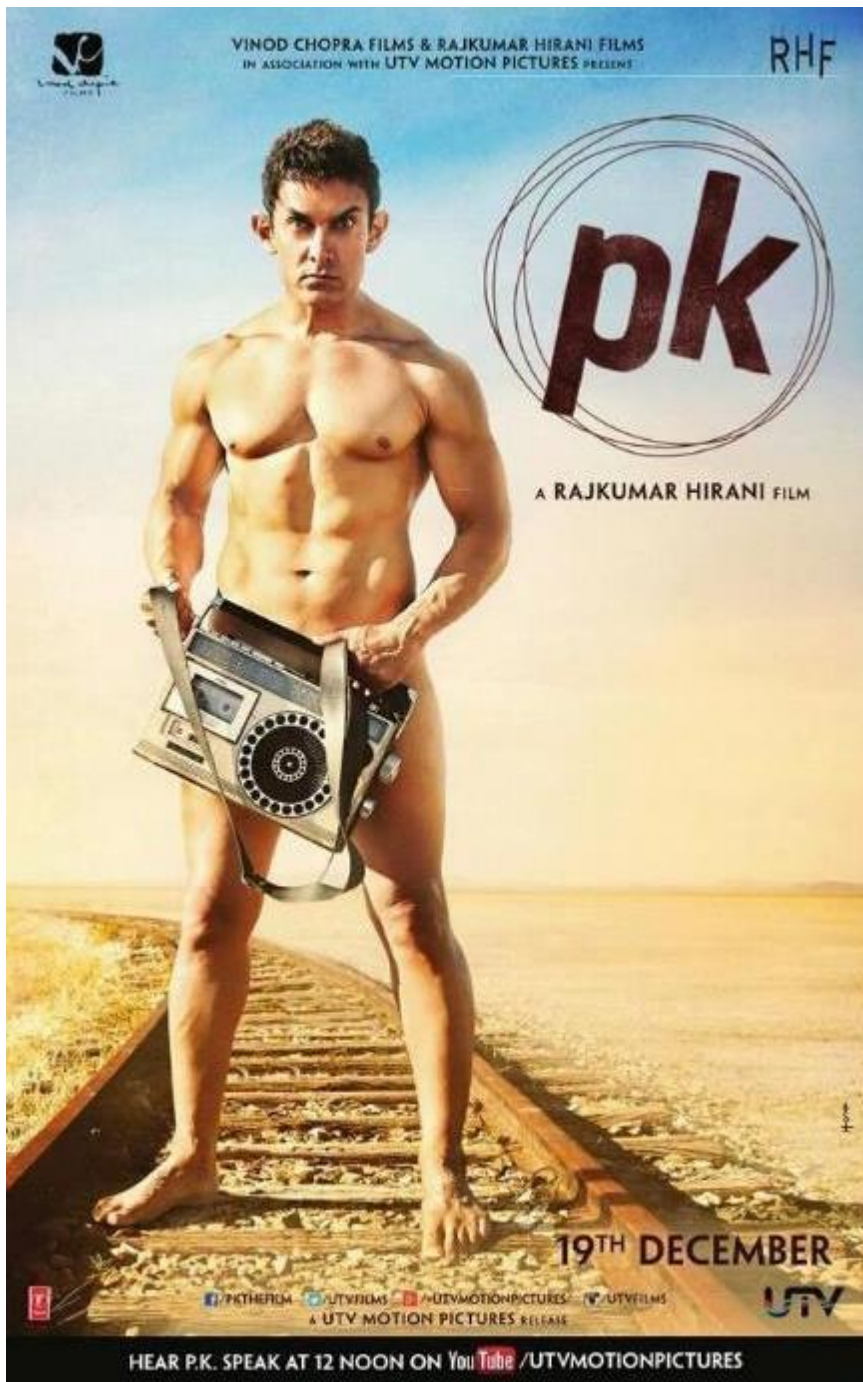
बहुत से लोगों ने इस फिल्म के और इस से पैदा हुए विवाद के बारे में लिखा है ! *PK* पहली ऐसी फिल्म नहीं है जिसने भारत में प्रचालित धार्मिक प्रथाओं को विवादित लेकिन आलोचनात्मक तरीके से पेश किया है ! अपनी सीधी-साधी कहानी के कारण इस पर बड़ी ज़बरदस्त प्रतिक्रिया हुई ! ये धर्म के वजूद के बारे में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचती है मगर बड़े ही सरल तरीके से अन्धविश्वास बारे सवाल उठाती है ! ऐसा फिल्मों में होता है कि वो देश से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर

सामाजिकी बहस की शुरुआत करते हैं ! विश्लेषकों का कहना है कि *PK* इस पीढ़ी की महत्वपूर्ण फिल्म है ! जिस देश में लोगों की सामाजिक चेतना में धर्म की जड़ें बड़े गहरे से समाई हों ये वहां अन्धविश्वास पर सवाल खड़ा करती है ! (पांडे, 2014)

***PK* का अध्ययन और धर्म का सिनेमाई चित्रण !**

PK फिल्म का निर्माण राष्ट्रीय और फिल्मफेयर इनाम हासिल करने वाले भारतीय फिल्म निर्माता, पटकथा लेखक और हिंदी फिल्मों के निर्माता राजकुमार हिरानी ने किया था ! ("बायोग्राफी," filmibeat.com). उन्होंने कामयाब फिल्म *मुन्ना भाई* MBBS (2000), *लगे रहो मुन्ना भाई* (2003), *थ्री इडियट्स* (2009) का निर्माण किया और उनकी पहलों फिल्मों की तरह इसका भी सामाजिक महत्व था ! इस फिल्म से पहले, उन्होंने शिक्षा प्रणाली, नौकरी और अच्छे नंबरों के लिए चूहा दौड़ और गाँधी के असूनों या गांधीगिरी को फिर से जीवित करने जैसे मुद्दों को उजागर किया ! *PK* के लिए हिरानी ने कथन की प्रक्रिया अपनाई और ये अक्सर हमें पृष्ठभूमि और किस्सों की तरफ ले जाती है ! उनका फिल्मों में हास्य के जरिये तंज़ करने का एक खास अंदाज़ होता है !

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !



चित्र-1, PK का आधिकारिक पोस्टर (bollywoodlife.com, 2014).

पोस्टर

आमिर खान ने फिल्म के पोस्टर के ज़रिये पहले ही खासा विवाद खड़ा कर दिया था ! अभिनेता पहली लुक के लिए पूरी तरह से नग्न था और दर्शकों की नज़रों को अपनी तरफ खींचने में पूरी तरह से कामयाब रहा ! PK के पोस्टर ने माइक्रो ब्लॉगिंग साइट्स ट्वीटर पर भी खासा उन्माद पैदा किया और ये फिल्म चुटकलों का केंद्र बन गयी ! वैसे 20 अप्रैल 2015 को दी टाइम्स ऑफ़ इंडिया में छपी एक

रपोर्ट के मुताबिक आमिर खान ने इसे सकारात्मक रूप में लिया और कहा “जब दर्शक इस फिल्म को देखेंगे तब ही आपको इस (पोस्टर) के पीछे का विचार समझ आएगा” ! पर मैं एक बात कहना चाहूँगा कि राजकुमार हिरानी जिस प्रकार के फिल्म निर्माता, लेखक हैं वो हमेशा चीज़ों को, अपनी सोच को, एक खास अंदाज़ में पेश करने की कोशिश करते हैं और इसी लिए मैं उनका फैन हूँ !” इस से फिल्म के बारे में कई विवाद खड़े हो गए !

प्लोट

PK एक ऐसे परग्रहीय की कहानी है जो भारत में धरती पर उतरता है और धार्मिक उपदेशों और परम्पराओं पर सवाल खड़ा करता है ! (भूषण, 2015) ! उसका “रिमोट कंट्रोल” एक खास तरह का यंत्र जिसके बिना वो अपने ग्रह पर वापिस नहीं जा सकता, चोरी हो जाता है !

परग्रहीय को हर कोई peekay या *PK* कहता है जिसका हिंदी में मतलब नशे में होना है क्योंकि धर्म और संस्कृति के नाम पर निर्भाई जाने वाली परम्पराओं और मान्यताओं के बारे में सवाल करने की वजह से वो हर समय खोया-खोया और सामान्य से अलग दिखाई देता है !

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2016

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

उसी घड़ी से वो दुनियां की खोज के सफ़र पर निकल पड़ता है ! वो “अच्छे और बुरे” दोनों तरह के लोगों से मिलता है, अलग-अलग जगहों पर जाता है और भाषा सीखता है ! अपनी इन्हीं कारवाइयों के दौरान उसे अलग-अलग विषयों और विचारों के बारे में पता चलता है और आखिरकार भगवान को तलाश करना शुरू करता है जो लोगों के मुताबिक उसका चुराया हुआ रिमोट कंट्रोल वापिस हासिल करने की एक अकेली उम्मीद है ! वो दूरवर्ती जगहों पर मंदिरों, मस्जिदों और गिरिजाघरों में जाता है ! वो हर आस्था के भगवान् को खुश करने के लिए पुजारियों और धार्मिक नेताओं की दी सलाह पर अमल करता है ! पर धीरे-धीरे खान के किरदार को लोगों को अन्धविश्वास और फ्राड से धोखा देने वाले कुछ

स्वयंभू गुरुओं यां “भगवानों” के बारे में पता चलता है ! यहाँ जगत जननी साहनी यानी जग्गू, जो कि एक टीवी रिपोर्टर है, PK की मुलाकात एक बाबा से करवाने, और इसके साथ ही PK को टीवी और लोगों के सामने पेश करने, में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जिस से भगवान के प्रति उसकी युक्तिसंगत सोच लोकप्रिय बन जाती है ! कहानी के आखिर में भगवान् बने तपस्वी बाबा (सौरभ शुक्ला), जिसके जग्गू के पिता (परीक्षित साहनी) समेत हज़ारों अनुयायी हैं और जो ये दावा करता है कि वो भगवान् से बात कर सकता है का भांडा फूट जाता है और सबको पता चल जाता है कि उसने झूठ बोलकर PK के रिमोट कंट्रोल को अपना बताया था ! उसने ये भविष्यवाणी भी की थी की पाकिस्तान का रहने वाला, जग्गू का प्रेमी सरफ़राज़ (सुशांत सिंह राजपूत) उसे धोका देगा मगर ये भी एक गलतफहमी साबित होती है ! ये सब टीवी के एक सीधे प्रसारण वाले कार्यक्रम में दर्शकों के सामने होता है, जहां बाबा और उस जैसे दूसरे लोगों की सच्चाई सबके सामने आ जाती है जिस से जग्गू के पिता की तरह दूसरे सभी लोगों की आँखों पर पड़ा पर्दा हट जाता है !

चरित्र

PK एक परग्रहीय है, जो अपना रिमोट कंट्रोल चोरी हो जाने के बाद गुम हो जाता है ! वो इस धरती की कोई भी भाषा बोल नहीं सकता मगर किसी के भी हाथ कुछ घंटे तक पकड़े रखने पर उसकी भाषा आसानी से सीख सकता है ! उसकी दो शख्सियतें बन जाती हैं ! एक वो जो परग्रहीय है जो इस ग्रह के नियमों, भाषाओं और परम्पराओं को नहीं समझता और दूसरी वो जो, एक वेश्या के हाथ पकड़ कर हस्तांतरण करने वाली प्रक्रिया से भोजपुरी भाषा (उसके बोलने से हास्य पैदा होता है) सीख जाता है !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !

कुल मिलाकर PK, लीक वाला चरित्र बन जाता है, जिसका मुंह पान चबाते रहने की वजह से लाल है, रंग-बिरंगे कपड़े पहनता है, उसकी शारीरिक भव-भंगिमा खास तरह की है, आँखें ज़रूरत से ज्यादा खुली रहती हैं और स्थितियों से गुज़रते हुए सामाजिक मान्यताओं, प्रतीकों, चालाकियों और आचरणों को समझने लगता है ! PK हर वक़्त एक पीले हेलमेट पहने रखता है जिसके पीछे का तर्क ये है कि इस तरह भगवान् उसे जल्दी पहचान लेंगे और उसे लगता है कि इस हेलमेट की वजह से वो उसे दूर से ही दिखाई देगा ! उसके हाथ में हमेशा एक टेप-रिकॉर्डर होता है (जो उसका रिमोट चुराने वाले का गिर गया था), वो भजन सुनता रहता है (हिन्दू धार्मिक प्रार्थना), और आवाज़ें रिकॉर्ड करता रहता है, जो बाद में पता चलता है कि सिर्फ जग्गू की थीं क्योंकि वो उसे प्यार करता था !

फिल्म में जग्गू किरदार की आमद, जो कि फिल्म की नायिका है, पृष्ठभूमि में चल रहे वायलन के मुख्य आधार वाले एक मस्ती भरे गाने के साथ होती है ! उसकी भाव-भंगिमाओं और चरित्रण से ये साफ़ हो जाता है कि वो खास तरह की धार्मिक लड़की नहीं है, और वो बेल्जियम में पढ़ाई कर रही है ! वो पाकिस्तान के एक मुस्लिम लड़के से प्रेम करने लगती है और जब वो उससे शादी करने का फैसला कर लेती है तो उसके लिए वो चर्च जाती है ! उसने बाल कटवाए हुए हैं और वो सिर्फ स्कर्ट, जींस, और आधुनिक पायजामा पहनती है ! एक टीवी रिपोर्टर होने के नाते उसका किरदार गैर-रूढ़िवादी है और उसका जिज्ञासु स्वभाव उसके व्यवसाय के साथ पूरा मेल खाता है ! जग्गू को शायरी पसंद है और इसी वजह से वो सरफराज की तरफ आकर्षित होती है जो पाकिस्तान का रहने वाला है और वास्तुकला की पढ़ाई कर रहा है, वो एक ज़िम्मेदार लड़का है और खाली समय में पाकिस्तानी एम्बेसी में काम भी करता है ! सरफराज एक आम दिखाई देने वाला किरदार है, जो खुश रहता है और बालीवुड स्टार अमिताभ बच्चन, उसे पसंद हैं ! वो एक प्रतिभाशाली शायर है और गाता भी बहुत अच्छा है और उसकी इन्हीं खासियतों ने जग्गू का मन मोह लिया ! ये बताने पर कि वो एक पाकिस्तान के मुस्लिम लड़के से प्यार करती है उसकी मां की प्रतिक्रिया पूरी तरह रूढ़िवादी थी और वो हैरान होकर कहती है “क्या तुम बुर्का पहनोगी ? क्या तुम नमाज़ पढ़ोगी ?” ! फिल्म में जग्गू के पिता जयप्रकाश साहनी को तपस्वी महाराज का ज़बरदस्त

अनुयायी दिखाया गया है जिनके दिल में तपस्वी के लिए बड़ा आदर-सम्मान है और वो उसे भगवान् यानी ईश्वर कहते हैं !

इस्लाम में रस्मी प्रार्थना को नमाज़ कहते हैं और मुस्लिम दिन में पांच बार नमाज़ अदा करते हैं !

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2016

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

जयप्रकाश तपस्वी बाबा के आशीर्वाद के लिए अपने घर की दीवारों, गुसलखाने, बिस्तर की चद्दरों, अपने बच्चों के स्कूल बैग वगैरह हर जगह पर उनके फोटो रखता है और यहाँ तक कि उनकी मंजूरी हासिल किये बिना कोई भी काम नहीं करता ! तपस्वी बाबा ही किसी भी काम को करने के समय बारे फैसला करते हैं ! इस से साफ़ पता चलता है की जयप्रकाश के दिल में तपस्वी बाबा के लिए कितनी आस्था है ! उसे बाबा की तरफ से “भगवान की एक संदुकड़ी” भी दी गयी है जिसमे अलग-अलग मामलों के लिए जैसे धन और सेहत वगैरह से सम्बन्धित हिन्दू देवी-देवताओं के प्रतीक रखे हैं ! हमें ये याद दिलाया जाता है कि प्रतीकवाद, धर्म और साधना का एक हिस्सा है ! (Hjarvard. 2006) !



चित्र-2, जग्गू के माता-पिता का परिचय दिया जाता है ! कुशन कवर पर तपस्वी का चित्र स्पष्ट दिखाई दे रहा है !

जग्गू जिस टीवी चैनल के लिए काम करती है उसके न्यूज़ डायरेक्टर चेरी बाजवा का किरदार निभाने वाले बोमन ईरानी एक यथार्थवादी इंसान हैं और वो उन खबरों को पेश करने में विश्वास रखते हैं जो बिना किसी विवाद के लोगों को अच्छी लगे और जिनसे TRP (टेलिविज़न रेटिंग अंक) बढ़े ! वो और उसका चैनल हर तरह की धार्मिक खबरों का विरोध करते हैं क्योंकि एक बार तपस्वी महाराज के बारे में नकारात्मक खबर दिखाने के बाद उनके अनुयायियों ने उनसे हाथापाई की थी ! जग्गू की तरफ से PK को (जब वो उसे सड़क पर भगवान् लापता के इश्तिहार बाँटते देखती है) टेलिविज़न पर दिखाए जाने की प्रार्थना के जवाब में वो कहता है कि भगवान् की तलाश का मतलब है धर्म और ये कोई खबर नहीं है, हाँ अगर उसे मिल जाते हैं तो वो खबर बन सकती है !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

धार्मिक मान्यताएं, प्रतीक और सिनेमाई कथानक

भगवान की परिकल्पना के साथ PK का पहला परिचय, भारत में इस्तेमाल होने वाले एक आम मुहावरे, जिसे वो एक पुलिसवाले के मुंह से सुनता है, के ज़रिये होता है , लेकिन उसका रिमोट कंट्रोल तलाश करने में मदद देने से पुलिस वाला ये कह कर इनकार कर देता है कि पुलिस वाले इंसान होते हैं भगवान नहीं ! ये बात PK के दिमाग में बैठ जाती है और उसे लगता है कि सिर्फ भगवान् ही उसे अपने लॉकेट रूपी रिमोट कंट्रोल यंत्र तक पहुंचा सकते हैं ताकि वो अपने ग्रह पर वापिस जा सके ! यहाँ PK कहता है कि धरती के लोगों ने शायद सही मानों में ये पता लगा लिया है कि उन्हें किसने बनाया और वो विभिन्न प्रकार के आस्थाओं के अनुयायियों और उनसे सम्बंधित पूजा स्थलों देखता है ! एक सीन में जहां PK को एक मंदिर (मुद्रिका मंदिर) में दिखाया गया है वो दान-पात्र (जो कि भारत की तकरीबन सभी धार्मिक जगहों पर रखे होते हैं) से पैसे चुराने की कोशिश करता है ! लोगों की मार से बचने के लिए वो जल्दी से अपने मुंह पर भगवान की तस्वीरें

चिपका लेता है ताकि लोग उसके मुंह पर थप्पड़ ना मारें और फिर जग्गू को बताता है कि यही वजह है कि लोग अपने घरों की बाहरी दीवारों पर भगवान् के चित्र बना देते हैं ताकि लोग वहां पेशाब ना करें ! ये भारत के सामाजिक-धार्मिक व्यवहार को दर्शाता है जहां नागरिक सोच कम है जबकि धार्मिक भावनाएं बहुत ऊँची हैं, और यही सामाजिक सच्चाई अगले सीन में साबित होती है ! जग्गू के पूछने पर, वो बताता है कि अपना रिमोट कंट्रोल वापिस देने के लिए अब तक अलग-अलग भगवानों को उसने जितना धन चढ़ाया है उसे वो वापिस लेने की कोशिश कर रहा है ! वो इसे अपनी प्रार्थना पर कारवाई करने के लिए जमा करवाया गया धन मानता है ! उसे क्योंकि पहले बताया गया था कि भगवान् उसकी मदद करेंगे, उसने भगवान् में विश्वास करना शुरू कर दिया और उसे खुश करने के लिए उसकी मूर्तियाँ खरीदने से लेकर मंदिरों में जाना और दान करने तक सब कुछ किया !

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2016

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9



चित्र-3, मार से बचने के लिए PK अपने चेहरे पर भगवान् के चित्र चिपका लेता है !

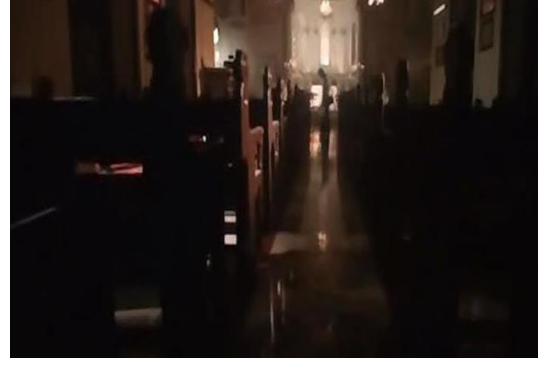
जग्गू के ये पूछे जाने पर कि वो दूसरों लोगों से अलग क्यूँ नज़र आता है, PK उसे अपनी कहानी सुनना शुरू करता है जहां हम फ्लैश-बैक में ले जाये जाते हैं ! वहां एक सीन में उसे बताया जाता है कि भगवान् की एक प्रतिमा प्रार्थना सुनती है तो PK पूछता है कि क्या भगवान् सीधे स्वयं नहीं सुनता ? उसे एक मंदिर ले जाया जाता है जहां भगवान् की एक विशाल प्रतिमा रखी हुई है ! यहाँ जब उसे एहसास होता है कि उसने जो दान दिया उसका जवाब नहीं मिला है तो PK भगवान के खिलाफ शिकायत लिखवाने पुलिस के पास जाता है ! ये “ओह माय गॉड” फिल्म (2012) जैसा ही है जिसमें नायक (परेश रावल) भगवान् के खिलाफ अदालत में मुकद्दमा दर्ज करवाता है ! इधर फिल्म में ऐसी स्थितियां उजागर की गयी हैं जिनसे हिन्दूओं, मुस्लिमों, ईसाईयों और सिक्खों द्वारा अपनाई जाने वाली धार्मिक मान्यताओं, प्रतीकों और आचरणों के देखने और फिर एक हिन्दू विधवा, ईसाई दुल्हन और बुर्का पहने मुस्लिम औरत देख वो दुविधा में पड़ कर परेशान हो जाता है ! बड़ी ही बारीकी से पेश की गयी यही वो बात है जो पूजा के अलग-अलग तरीके होने की वजह से होने वाले साम्प्रदायिक दंगों को उजागर करती है ! शुरू में जब उसे ये पता नहीं चलता कि एक धर्म में पूजा करने का जो तरीका है उसे दूसरे धर्म की पूजा करने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता तो उसकी इन हरकतों की वजह से लोग गुस्सा करने लगते हैं ! वो देखता है कि चर्च में “पवित्र जल” दिया जाता है तो वो शराब लेकर मस्जिद में चला जाता है, वो ऐसी हरकतें तब तक करता रहता है जबतक उसे अलग-अलग धर्मों के बारे में पता नहीं चल जाता ! वो कहता है कि इस धरती के कई भगवान् हैं और उन सब भगवानों की अपनी कम्पनियाँ हैं, जिन्हें धरती के लोग धर्म कहते हैं ! और हर धर्म के अलग-अलग मैनेजर (पुजारी, देवता, पुरोहित) हैं और हर इंसान का इनमें से किसी एक कम्पनी के साथ सम्बन्ध है !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !

ये पता लगाने के लिए कि उसका सम्बन्ध किस कंपनी से है वो नए जन्मे बच्चों पर निशान यां ठप्पे तलाश करना शुरू करता है जिनसे ये पता चल सके कि ये कैसे स्थापित हुआ कि एक खास बच्चा एक खास धर्म को मानेगा ! इसमें नाकाम रहने पर वो हर धर्म को मानना शुरू करता है ताकि अपने सही धर्म का पता लगा सके ! ये दुविधा की स्थिति एक गाने के ज़रिये प्रदर्शित की गयी है जो कहानी को आगे ले जाने के लिए लिखा गया है ! ये गाना अपने उस मालिक की तलाश के लिए किये गए उसके संघर्ष को पेश करता है जो उसकी घर वापिसी में मदद कर सके ! इस गाने में अलग-अलग धर्मों, हिंदुओं, सिक्खों, मुस्लिमों, ईसाईयों, जैनियों वगैरह की तरफ से अपनाए गए धार्मिक आचरणों का गाने के बोल और विषय के साथ मिश्रण किया गया है !





चित्र-4, भगवन है कहाँ रे तू गीत से लिए कुछ दृश्य

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2016

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

है सुना ये पूरी धरती तू चलाता है,
मेरी भी सुन ले अरज, मुझे घर बुलाता है !
भगवान् है कहाँ रे तू, ऐ खुदा है कहाँ रे तू !
है सुना तू भटकते मन को राह दिखाता है,
मैं भी खोया हूँ मुझे घर बुलाता है !
भगवान् है कहाँ रे तू, ऐ खुदा है कहाँ रे तू !
मैं पूजा करूँ यां नमाज़ें पढ़ूँ,
अरदास करूँ दिन रैन
ना तू मंदिर मिले न तू गिरिजे मिले,
तुझे ढूँढे थके मेरे नैन !
तुझे ढूँढे थके मेरे नैन !
तुझे ढूँढे थके मेरे नैन !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !

जो भी रस्में हैं वो सारी, मैं निभाता हूँ ,

इन कारिंदों की तरह मैं सर झुकाता हूँ,
भगवान् है कहाँ रे तू, ऐ खुदा है कहाँ रे तू !
तेरे नाम कई, तेरे चेहरे कई,
तुझे पाने की राह हैं कहाँ,
हर राह चला पर तू न मिला,
तू क्या चाहे मैं समझा नहीं,
सोचे बिन समझे जत्न करता ही जाता हूँ,
तेरी जिद सर-आँखों पर रख के निभाता हूँ,
भगवान् है कहाँ रे तू, ऐ खुदा है कहाँ रे तू !

इसमें स्पष्ट रूप से सभी धर्मों का जिक्र नहीं हुआ है और ना ही किसी विशेष आस्था के बारे में कुछ कहा गया है, लेकिन इस में जो बात कही गयी है वो ये है कि एक आदमी सच में नहीं जानता कि भगवान् को पाने के लिए वो क्या कर सकता है !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !

हालांकि ये स्पष्ट रूप में नहीं कहा गया है, मगर ऊपर लिखे पैरे की पहली लाईन को इस तरह से परिभाषित किया जा सकता है की वो भगवद्गीता (हिन्दू ग्रन्थ) के उस कथन से प्रेरित है जिसमे कहा गया है कि किसी प्रकार की चिंता और फल की इच्छा किये बिना अपना कर्म करते जाओ ! यहाँ नायक ये भी कहता है की परम्पराओं और तौर-तरीकों पर चलकर वो भगवान् को ढूढने के लिए जतन करता जा रहा है, हालांकि जब वो हताशा की हालत में ये पूछता है कि “भगवान् है कहाँ रे तू, ऐ खुदा है कहाँ रे तू” तो यहाँ लगता है की उसका संयम जवाब दे रहा है ! (“लिरिक्स,” bollymeaning.com, 2014)

इसके बाद एक भावनात्मक सीन है जहां PK अपनी बेबसी दिखाते हुए रोता है और लापता भगवान् को ढूँढने का फैसला करता है ! ये लोगों की उस भावना को प्रदर्शित करता है जो वो किसी काम में नाकाम होने पर या मदद के लिए प्रगट करते हैं ! तब उसे एक आदमी दिखाई देता है जिसने बिलकुल भगवान् शिव जैसा वेश धारण किया हुआ है, (वो एक कलाकार हो जो एक नाटक में शिव की भूमिका निभाने जा रहा है मगर PK नहीं जानता की वो नकली है) और वो उसका पीछा करते तपस्वी फाउंडेशन तक चला जाता है जहां तपस्वी उसका रिमोट कंट्रोल लोगों को ये कहकर प्रदर्शित कर रहा है कि ये उसे भगवान् शिव की ओर से भेंट स्वरूप मिला है जिनके उसे हिमालय पर दर्शन हुए थे (वो कहता है कि ये भगवान् शिव की माला का एक हिस्सा है जिसे वो मनका कहता है) ! तपस्वी कहता है की भगवान शिव ने उसे आदेश दिया कि इस प्रतीक के लिए एक विशाल मंदिर का निर्माण करवाओ ! बहुत से हिन्दू संगठनों ने फिल्म में भगवान् शिव को इस तरह प्रदर्शित किये जाने पर ये कहते हुए रोष प्रगट किया कि इससे हिंदुत्व को ठेस पहुंचती है, उन्होंने भगवान् शिव को बाथ-रूम में जाते हुए दिखाया है और उसे वहां बंद किया जाता है ! वो महादेव का मज़ाक उड़ाते हैं और कहते हैं कि वो नहाते नहीं हैं ! आमिर खान पैसा बनाना चाहता है ! वो हमारे भगवानों का ध्यान नहीं रखता है ! (घोषाल, 2015)

इसके बाद जग्गू चैरी को इस बात के लिए मनाती है कि वो टीवी पर PK और तपस्वी की एक मुलाकात दिखाए जिसके लिए वो उसकी फाउंडेशन के पास जाते हैं ! तपस्वी बहुत बड़ी जनसभा का आयोजन कर उनकी समस्याओं का ये कहते हुए जवाब देता है कि उसके माध्यम से भगवान स्वयं उनके सवालों के जवाब दे रहे हैं ! PK को लगता है कि गलत हल बता कर कोई नकली भगवान् उसे मुख बना रहा है इसलिए वो तपस्वी को ये कहते हुए चुनौती देता है कि वो गारंटी दे कि उसके बताये हल सही हैं ! इस आपाद स्थिति से निपटने के लिए तपस्वी ये कहकर शोर मचा देता है कि PK शायद एक मुस्लिम हो जो विशाल मंदिर के बनाए जाने की खिलाफ है ! इसके जवाब में PK ये कहकर एक बार फिर से

हलचल पैदा कर देता है कि भगवान् किसी धर्म के बारे में भेद-भाव नहीं करते क्योंकि किसी पर भी जन्म का कोई भी चिन्ह यां ठप्पा नहीं है (धर्म का) !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>



चित्र-5, उस दृश्य से लिए गया चित्र जिसमें PK विभिन्न आस्थाओं के बीच के अंतर को कम करने की कोशिश करता है !

PK ने अब लोगों को बांटने वाले नकली भगवानों और धर्म के मैनेजरों के खिलाफ एक जंग छेड़ दी ! उसके टीवी शो पर लोगों से कहा गया कि अपने आप को भगवान् कहलवाने वाले सभी धर्मों के ऐसे लोगों का पर्दा फाश करें ! उसने कहा कि ये लोग अपना धर्म का धंधा चलाने और धरती पर भगवान् का प्रतिनिधि बनकर काम करने के लिए लोगों के भीतर के डर को इस्तेमाल करते हैं ! उसने इस बात को एक पत्थर को एक मूर्ति के रूप में इस्तेमाल करके प्रदर्शित किया और वो साबित हुई ! दर्शकों ने वीडियो भेजना शुरू किया जिनमें भगवान् कहलवाने वाले हिन्दु गुरुओं, इसाई मिशनरियों, फतवे जारी करने मुस्लिम मुल्लाओं के भेद खोले गए थे ! इस से विवश हो कर तपस्वी ने चेरी से कहा कि वो PK के साथ आमने-सामने कार्यक्रम का आयोजन करवाए ! PK की प्रसिद्धी देख कर उसका पुराना दोस्त भैरों सिंह (संजय दत्त) जिसने उसका रिमोट गुम हो जाने के बाद उसकी मदद की थी, रिमोट चोरी करने वाले को पकड़ लेता है जो

PK को बताता है कि उसने ही वो रिमोट तपस्वी को बेचा था ! PK को अब एहसास हो जाता है कि तपस्वी को कोई मुर्ख नहीं बना रहा बल्कि वो खुद ही एक धोखा है ! शो से पहले एक बम धमाका होता है जिसमे भैरों सिंह और रिमोट का चोर मारे जाते हैं और उसके षडयंत्रकारियों के धर्म का कोई पता नहीं चलता ! PK टूट जाता है पर शो शुरू हो जाता है जहां भगवान को धोखा और लापता बताने के लिए, मंदिर बनाने के लिए भगवान् शिव से मिली दैविक भेंट के बारे झूठ बोलने, लोगों को धर्म विरोधी बनाकर उन्हें कष्टों में धकेलने और लोगों से उनकी आशाओं को छीनने के आरोप लगाकर तपस्वी, PK को निशाना बनाता है ! ये फिल्म की चरमसीमा है और यहाँ पर PK के संवादों और अभिनय में भावनाओं और तर्क की पराकाष्ठ पैदा की गयी है ! वो कहता है कि इंसान बनाने वाले उस भगवान् के इलावा एक और भगवान् है जो अपने आप को भगवान कहलवाने वाले इन लोगों ने पैदा किया है और जो बिल्कुल इनकी तरह है, झूठ बोलता है, रिश्वत लेता है, अमीरों के जीवन को संवारता है ! PK ऐसे भगवानों को तपस्वी की तरह धोखा बताता है और कहता है कि लोगों को असली भगवान पर विश्वास करना चाहिए और ना की रचे गए नकली भगवान् पर ! वो दुनियां बनाने वाले की उदारता और महानता की बात करता है और ये भी बताता है कि कैसे तपस्वी जैसे धोखेबाज़ लोगों को कम करके आंकते हैं और भगवान् के नाम पर उन्हें मरवा देते हैं ! तपस्वी, मुसलमानों को धमाके का षडयंत्रकारी बताता है, जो कि एक घिसा-पिटा सामाजिक वाक्य बन चुका है, जिसके जवाब, PK सरफराज का मामला उठा देता है जिसे तपस्वी ने धोकेबाज़ बताया था ! इसी शो के दौरान वो ग़लतफ़हमी दूर होती है और बताया जाता है कि सरफराज अब भी जग्गू से प्यार करता है और उसका इंतज़ार कर रहा है ! स्थिति को बदलने के लिए दिखाया जाता है कि जग्गू के पिता, जो उस वक़्त PK से बहुत नफरत करते थे जब उसने तपस्वी का अपमान करना शुरू किया था, खुद तपस्वी के हाथ से वो रिमोट छीनकर PK को देते हैं

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

दृश्यों का चित्रण और स्थान

पूरी फिल्म में विभिन्न स्थलों जैसे मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजाघरों, गुरुद्वारों (क्रमशः हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई और धार्मिक स्थल) को दिखाया गया है !

श्रेय दिए जाने वालों की सूची में फिल्म प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रवि शंकर जी के आर्ट ऑफ़ लिविंग फाउंडेशन का धन्यवाद किया गया है क्योंकि फिल्म के महत्वपूर्ण दृश्यों जैसे तपस्वी का आश्रम, कर्मचारी, अनुयायी, मंच इत्यादि जो इस फिल्म के महत्वपूर्ण पहलु हैं का फिल्मांकन रवि शंकर के बंगलौर स्थित आर्ट ऑफ़ लिविंग फाउंडेशन के आश्रम में किया गया है ! फिल्म के निर्देशक ने कहा था कि मुझसे ये पूछा जाता है, अगर मैं धार्मिक गुरुओं के खिलाफ हूँ तो फिर मैंने फिल्म की धन्यवाद व्यक्त करने वाली सूची में श्री श्री रविशंकर जी का आभार क्यों व्यक्त किया , मेरा जवाब है कि मैं धार्मिक गुरुओं के खिलाफ नहीं हूँ मैं केवल नकली गुरुओं के खिलाफ हूँ ! ("PK: why," टाइम्स ऑफ़ इंडिया, जनवरी 7, 2015) !

एक तरीके से धर्म को स्वयं में एक साधन के रूप में देखा जा सकता है ! कई बार ये स्वयं और भगवान के बीच एक माध्यम स्थापित करने का साधन माना जाता है जो संस्थानों, पदाधिकारियों और आचरण से निर्मित एक समूह है, एक ढांचा है जैसे कि चर्च, पवित्र ग्रन्थ और उपदेशक ! मीडिया की भांति धर्म भी विश्व को समझने के लिए प्रतीक, चिन्ह और कथाएं प्रस्तुत करता है ! ऐसी सोच का हॉलैंड के दार्शनिक हेंट दे व्रिएस (Hent de Vries) ने बड़े अच्छे तरीके से समर्थन किया है जो दावा करते हैं की साधना करने के इन आचरणों और प्रवचनों के बिना धर्म अपने आप को व्यक्त करने योग्य नहीं होगा ! (जूनेन, 2011)

शुरु में जब भगवान् से सहायता लेने के लिए उसकी तलाश की कहानी आगे बढ़ने लगती है तो PK को प्रार्थना की माला पहने, ताज़ीब पहने, जंतर पहने, मालाएं, धागे पहने हिंदुओं के प्रमुख भगवानों के चित्र लिए, प्रतीक लिए, नमाज़ पढ़ते, चर्च

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !

में प्रार्थना करते, गुरुद्वारों में माथा टेकते, और अपने आप को भगवान् कहलाये जाने वाला, उपदेशक, पुरोहित जो कुछ भी उसे कहता वो उस आचरण का पालन करता ! भगवान् को खुश करने की इच्छा से उसे लगभग हर धर्म के पूजा स्थल जैसे हिन्दू देवताओं के मंदिर, मस्जिदें, चर्च और गुरुद्वारों पर जाते दिखाया गया है ! इसके फिल्मांकन के लिए प्रतीकों और यहाँ तक कि पुराने तौर-तरीकों को भी असरदार तरीके से इस्तेमाल किया गया है ! इस फिल्म में जग्गू की पढ़ाई के दौरान उसकी शुरुआती ज़िन्दगी और प्रेम-प्रसंग को दिखाने के लिए जो एक और गैर चिर-परिचित जगह इस्तेमाल की गयी है वो है ब्रुगेस (Bruges), बेल्जियम ! वहाँ चूँकि एक भारतीय लड़की और पाकिस्तानी लड़के के बीच अंतर्धार्मिक सम्बन्ध हैं जो फिल्म की शुरुआत में बड़े खुलेपन में पनपता है, जिसकी भारतीय परिवेश में कल्पना नहीं की जा सकती थी क्योंकि दोनों मुल्कों के बीच भौतिक सतह पर बड़ा कम संपर्क है और इसलिए ऐसे के सम्बंधों की संभावना बहुत ही कम है ! साथ ही भारतीय समाज में इस तरह के विवाहों का विरोध होता है ! जग्गू के देहली लौटने पर शहर और हिन्दू भगवान् हनुमान की एक विशाल प्रतिमा का परिचय दिया जाता है जो रेल की पृष्ठभूमि में स्पष्टरूप से दिखाई गयी है !

निष्कर्ष

भारतीय समाज मुख्य रूप से धार्मिक समूह है ! यहाँ अलग-अलग तरीके से धर्म का पालन किया जाता है और यहाँ की सामाजिक व्यवस्था में आस्था का विस्तार व्यक्तिगत जीवन से भी आगे है ! इस धार्मिक प्रकृति का जन्मजात अंग है भारतीय समाज की जड़ों में समाई गॉडमेन प्रथा की मौजूदगी जिसने विभिन्न आस्थाओं और आचरणों को अपनी जकड़ में ले रखा है ! यहाँ सैंकड़ों ऐसे स्थापित आध्यात्मवादी और रहस्यवादी हैं जो हज़ारों-लाखों अनुयायियों की श्रद्धा को प्रेरित करते हैं और खुद उन राजनितिक दलों से गठजोड़ कर अक्सर खर्चीला और मुक्त

जीवन जीते हैं, जो उन्हें अपने लिए मतदाता तैयार करने के लिये कहती हैं ! (राधे मां से सारथी बाबा तक,” हिंदुस्तान टाइम्स, 2015)

प्रकाशित DigitalCommons@UNO 2016

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

भारतीय फिल्मों अपनी शुरुआत से ही साधू-संतों को एक रुढ़ीवादी तरीके से परदे पर दिखाती आई हैं जो अक्सर धार्मिक संरक्षणवाद के मुताबिक ही होता है ! ऐसे ही कुछ स्वयंभू पवित्र साधू-संतों और साध्वियों के अपवित्र कार्यों को हाल ही में सामने लाया गया है ! समाचार मीडिया ने भी कथित भगवानों से जुड़े अन्धविश्वास बारे चिंता करते हुए कई बड़े-बड़े सम्मानित बाबाओं और गुरुओं का (भारत में इन भगवानों को यही कहा जाता है) भण्डाफोड़ किया है ! 2014 में समाचारों की सुर्खियाँ बना बाबा आसाराम केस इस बारे में अध्ययन के लिए एक दिलचस्प विषय है ! धोखा, यौन शोषण, राजनीतिक प्रभाव और अपराध की विशेषता वाले आसाराम और उसका पुत्र गुरु नित्यानंद गुरु-भक्त परम्परा में शीर्ष पर थे जिन्होंने अरबों डालर की सम्पत्ति इकट्ठी कर अलग से अपना एक राज्य स्थापित कर लिया था ! अभी हाल ही में अगस्त 2015 में राधे मां (माता राधे) और गुरु सारथी बाबा का भण्डाफोड़ हुआ है लेकिन ये आध्यात्मिक या धार्मिक भ्रष्टाचार की लम्बी सूची के सामने बहुत कम है ! समाज में धार्मिक धोखाधड़ी के ये संकेत मिलने के बावजूद हिन्दू राष्ट्रवादी और दायें-बाजू वाले गुप्तों ने *PK* के खिलाफ एक धर्मयुद्ध शुरू कर दिया जिसने आध्यात्मिक-भ्रष्टाचार के बारे में सिनेमा के माध्यम से संशोधित सोच के निर्माण की कोशिश की ! ये फिल्म इस बात की एक और मिसाल बन गयी कि किस तरह असहनशीलता और इन मामलों में, जो कि संवेदनशील कहे जाते हैं, संवाद की संभावना न छोड़े जाने का रवैया आज भी किसी हद तक कायम है ! ऐसी आक्रामक आवाजें, धर्म बारे पारंपारिक उपदेशों और धार्मिक प्रतीकों का समर्थन करते हुए समकालीन फिल्मों में पैदा होने वाली

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ़ आमिर खान'ज़ PK !

सामाजिक सच्चाई को दबा देती हैं ! कला का दमन सिर्फ फिल्मों तक ही सिमित नहीं है बल्कि विचार व्यक्त करने की सभी विधाओं पर है ! प्रसिद्ध चित्रकार मुहम्मद फ़िदा हुसैन जिन्हें भारत का पिकासो भी कहा जाता है, राजनीतिकरण वाले आधुनिक धार्मिक साम्प्रदायिकता के अभिशाप का शिकार हुए और उन्हें अपनी ज़िन्दगी के आखिरी दिन विदेश में बिताने के लिए मजबूर कर दिया गया (थरूर, 2011) ! दमन के ढाँचे अक्सर लचीले और गहरी जड़ों वाले होते हैं और उन्हें उखाड़ने के लिए राजनितिक और सामाजिक बदलाव की ज़रूरत होती है सिर्फ कलात्मक कथन से ये संभव नहीं हो सकता ! (बर्टन, 2013) ! इस से पता चलता है की सहनशीलता केवल अभिव्यक्तियों से नहीं बल्कि सामाजिक संस्थानों से ही पैदा की जा सकती है ! *PK* ने विभिन्न सतहों पर प्रदर्शनों और नकारात्मक प्रतिक्रिया को जन्म दिया जिसके लिए सिनेमा हाल में पोस्टरों को फाड़ने जैसी हिंसक बर्बरता और फिल्म, फिल्म निर्माता, और अभिनेताओं को गाली देने, दुर्व्यवहार करने के लिए पारंपारिक साधनों और आधुनिक साधनों, वेब प्लेटफार्म जैसे सोशल मीडिया तक को इस्तेमाल किया गया ! फिल्म रिलीज़ होने के तकरीबन कुछ ही देर बाद एक हैशटैग जिसका नाम था #बहिष्कार PK और एक समान्तर विरोधी हैशटैग जिसका नाम था “# मैं PK का समर्थन करता हूँ” चलाये गए (पांडे, 2014) ! जैसे की पहले भी चर्चा की जा चुकी है कि फिल्म रिलीज़ (दिसम्बर, 2014) का समय बड़ा महत्वपूर्ण था क्योंकि 2014 के दौरान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, जिससे भारतीय जनता पार्टी का उद्गम हुआ (गोपाल, 2014), के सदस्य रहे, बहुचर्चित और आकर्षक वक्ता नरेंद्र मोदी की अगुवाई वाली सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी सरकार के सदस्यों के साम्प्रदायिकता वाले बयानों और दायें बाजु वाले ग्रुपों के अलग-अलग प्रोग्रामों की वजह से धार्मिक अल्पसंख्यक दबाव में थे ! स्थिति की गंभीरता से मजबूर होकर अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को उस वक्त भारत में बढ़ रही धार्मिक असहनशीलत पर अपनी

नाखुशी प्रगट करनी पड़ी, जब वो यहाँ 26 जनवरी 2014 के गणतंत्र दिवस समारोह पर मुख्य अतिथि थे जिसने भारत में और भी कई लोगों को उकसाया (गोवेन, 2015) ! हिन्दू संगठनों जैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद् के “लव जिहाद” और “घर वापसी” वगैरह की वजह से पैदा हुए साम्प्रदायिक टकराव ने PK फिल्म के अध्ययन को तय्य करने और इस बारे सामाजिक विचारों को एक आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ! बजरंग दल इस बात को लेकर प्रदर्शन कर रहा था की इसमें भारतीय लड़की और पाकिस्तानी लड़के को लेकर रचा गया प्रेम प्रसंग “लव-जिहाद” (“PK storm,” Evantha 2014) को बढ़ावा दे रहा है !

मोदी संघ परिवार के नाम से जाने वाले अतिवादी हिन्दू नेटवर्क से अपने संबंधों को नकारते नहीं हैं और 2002 के बदनाम गुजरात दंगों के समय वो गुजरात के मुख्य मंत्री थे जिनमे हजारों मुसलामानों को निशाँ बनाय गया था ! मोदी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के गोपनीय और सशस्त्र शाख के अग्रणी कार्यकर्ता थे जिसके संस्थापक प्रजातीय पवित्रता और फासीवाद के गुणों वाली हिटलर की विचारधारा के बड़े प्रशंसक थे !

Read further गोपाल, प्रियम्बदा, “नरेंद्र मोदी : ब्रिटेन cannot simply shrugg off this Hindu extremist” The Guardian, Apr. 14, 2014

<<http://www.theguardian.com/commentisfree/2014/apr/14/narendra-modi-extremism-india>>

प्रकाशित DigitalCommons@UNO 2016

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

जबकि दीपा मेहता जैसी फिल्म निर्माता पर बड़ी आसानी से ये आरोप लगाया जा सकता है कि उन्होंने भारत से बाहर बसे होने की वजह से फायर यां वाटर फिल्मों में हिन्दुवाद के एक दुसरे स्वरूप को पेश किया है जिसके लिए उन्हें रोष का सामना करना पड़ा लेकिन उसकी तरह PK फिल्म का विवाद फिल्म निर्माता पर केन्द्रित नहीं था बल्कि ये फिल्म के नायक आमिर खान पर था जिसको अपनी विशेष धार्मिक पृष्ठभूमि के लिए निशाना बनाय गया था जैसा कि कई लेखकों की

तरफ से देखा गया ! ये विडम्बनापूर्ण था और मीडिया के अलग-अलग मंचों पर इसकी निंदा की गयी ! प्रदर्शनों और उपद्रवों में जो प्रमुखता और विस्तार PK के समय देखा गया वो, “ओह माय गॉड” और इस तरह के विषय वाली की दूसरी फिल्मों के बारे में देखने को नहीं मिला, जिनमे नायक की भूमिका हिन्दू अभिनेताओं, परेश रावल और अक्षय कुमार ने निभाई थीं ! “ओह माय गॉड” के निर्देशक नरूला ये कहते हुए पूरी तरह से PK के समर्थन में आये कि “उन्होंने मेरी फिल्म के खिलाफ भी प्रदर्शन किया था ! जालंधर में उन्होंने पोस्टर जला दिए थे और थियेट्रों में गुंडागर्दी की ! मगर इस सतह पर नहीं ! PK के खिलाफ प्रदर्शन कहीं अधिक उग्र हैं” (शुक्ला, 2015) ! हालांकि नरूला की फिल्म में नायक की भूमिका निभाने वाले परेश रावल भगवान् को अदालत में ले जाते हैं, फिर भी प्रदर्शन इतने गंभीर नहीं थे ! इसको वर्तमान राजनितिक सत्ता की पृष्ठभूमि और भाजपा के मुख्य भूमिका निभाए जाने के सन्दर्भ से भी देखा जा रहा है क्योंकि रावल जो उस समय लोकसभा चुनाव में भाजपा के उम्मीदवार थे वो अब भाजपा के सांसद हैं {“Why is there so much controversy? Quora.com”} !

भारत में विचारों की स्वतंत्रता पर लम्बी बहस हुई है और ये फिल्म, विचारों की आजादी पर पाबन्दी लगाने वाले अलग-अलग आयामों और धर्म और इसके आचरण या वर्णन बारे आम सोच से पर्दा हटाते हुए, उस बहस को केवल और आगे ले जाती है ! धर्म में रुढ़िवाद अक्सर उन फिल्मी कथानकों को चुनौती देने में सहायक रहा है जो धर्म, संस्कृति, या मूल्यों के संशोधन सम्बन्धी विषय पर आधारित होते हैं और ये उस समय और भी विकट बन जाती है जब कहानी को लैंगिक नजरिये से देखा जाता है क्योंकि ये नजरिए पारंपरिक रवैये की विरुद्ध जाते हैं ! हिन्दुवाद के पारम्परिक संरक्षणवाद का वही स्वरूप वास्तविक स्वरूप है जिसे इसके प्रतिनिधियों ने स्वीकृति दी है, जो बड़ी आसानी से शोषित हो जाता है और इसके विरुद्ध जाने वाली फिल्मों को लगातार प्रदर्शनों का सामना करना पड़ेगा !

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्म एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ आमिर खान'ज़ PK !

व्यक्तिवाद और छोटी सोच रखने वाले मुद्दे भारत जैसे समाज को, जो अपने आपको धर्मनिरपेक्ष, विभिन्नता वाला और लोकतान्त्रिक राष्ट्र कहलवाने के आडम्बर को बनाए रखने में गर्व का अनुभव करता है, एक रोग की भांति लगे हैं और लगे रहेंगे !

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

बिब्लियोग्राफी

“आमिर खान'ज़ पीके: 5 रीज़न्ज़ टू वाच द फिल्म.” *टाइम्स ऑफ़ इंडिया*. 2014. एक्सेसड अप्रैल 20, 2015.

<http://timesofindia.indiatimes.com/>

एंटरनेटमेंट/हिंदी/बालीवुड/आमिर-खान'ज़-पीके-5-रीज़न्ज़-टू-वाच-दा-फिल्म
/फोटोस्टोरी/40046131.cms

“आफ्टर घर वापसी एंड लव जिहाद’, Hindu रेडिकल ग्रुप्स स्टार्ट ‘बहु लाओ, बेटी बचाओ प्रोग्राम इन बंगाल .” *इंडिया टीवी न्यूज़* मार्च 13, 2015. एक्सेसड अप्रैल 14, 2015 !

<http://www.indiatvnews.com/news/india/hindu-radical-groups-start-bahu-lao-betibachao->

प्रोग्राम-इन-wb-48466.html बार्टन, क्रिस्टीन. “ गॉड इन द मूवीज: व्हेन बनल When Banal रिलिजियन इज़ डिसगाइस्ड बाई ह्युमोर.” मीडिया, फिल्म, म्यूजिक, रिलिजियनब्लॉग, अक्टूबर 28, 2010. एक्सेसड अप्रैल 20, 2015

[http://religionandmediacourse.blogspot.in/2010/10/god-in-movies-when-banalreligion-](http://religionandmediacourse.blogspot.in/2010/10/god-in-movies-when-banalreligion-is.html) is.html

भाटिया सिद्धार्थ “ शिव सेना डेस्परेट गैम्बल तो सर्वाइव.” *खलीज टाइम्स*. फरवरी 13, 2010. एक्सेसड जुलाई 9, 2015.

<http://www.khaleejtimes.com/article/20100212/ARTICLE/302129991/1098>

प्रकाशित DigitalCommons@UNO,

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

भूषण न्याय ! "PK बीकॉमेज़ टॉप-ग़ोस्सिंग फिल्म ऑफ़ आल टाइम इन इंडिया '. हालीवुड रिपोर्टर ! जनवरी 6, 2015. एक्सेसड अप्रैल 20, 2015

www.hollywoodreporter.com/PK-becomes-top-grossing-film-of-all-time-in-india/
एक्सेसड

"बायोग्राफी ऑफ़ राजकुमार हिरानी." फिल्मबीट. एक्सेसड अप्रैल 28 2015

<http://www.filmibeat.com/celebs/rajkumar-hirani/biography.html>

बर्टन डेविड ऍफ़ ! "फायर, वाटर, एंड दा गॉडेस: दा फिल्मज़ ऑफ़ दीपा मेहता एंड सत्यजीत रे एज़ क्रिटिकस ऑफ़ हिन्दू पेट्रियारकी." जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म, 17 (2) (2013), 6-77. "क्रोनोलोजी ऑफ़ कम्युनल वाईलेंस इन इंडिया." हिंदुस्तान टाइम्स नवम्बर 09, 2011. एक्सेसड अप्रैल 14, 2015

<http://www.hindustantimes.com/>

आर्काईवज़/क्रोनोलोजी-ऑफ़कम्युनल-वाईलेंस-इन-इंडिया/आर्टिकल 1-8038.aspx

"फ्रॉम राधे मां टू सारथी बाबा : वेरियस अवतारस ऑफ़ स्पिरिचुअल गुरुज़." हिंदुस्तान टाइम्स अगस्त 08, 2015. एक्सेसड अगस्त 09, 2015

<http://www.hindustantimes.com/indianews/>

मा-बाबा-एंड-मेस-गलोर-वेरियस-अवतारस-ऑफ़ सेल्फ-स्टाइल्ड-स्पिरिचुअलगुरुज़/आर्टिकल1-1377393.एसपीएक्स

घोषाल, अनिरुद्ध ! "बजरंग दल सेज़ पीके ए कांसीपाईरेसी." इंडियन एक्सप्रेस दिसम्बर 31, 2014. एक्सेसड अप्रैल 29, 2015

<http://indianexpress.com/article/cities/delhi/bajrang-dalsays-pk-a-conspiracy/>

घोष, अबंतिका, एंड सिंह, विजेता ! "सेंसस : हिन्दू शेयर डिप्स बिलो 80%, मुस्लिम शेयर ग़ोज़ बट स्लोअर." दा इंडियन एक्सप्रेस जनवरी 24, 2015. एक्सेसड अप्रैल 15, 2015

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

www.indianexpress.com/article/india/india-others/census-hindu-share-dips-below-80-

मुस्लिम-शेयर-ग़ोज़-बट-स्लोअर/

गोपाल, प्रियंवदा ! “नरेंद्र मोदी : ब्रिटेन कैन नाट सिम्पली श्रग ऑफ दिस हिन्दू एक्सट्रीमिस्ट.’
दा गार्डियन अप्रैल 14 2014. ऐकसेस्ड

<http://www.theguardian.com/commentisfree/2014/apr/14/narendra-modi-extremismindia>

गोवेन, एनी. “ओबामा’ज़ रिमाक्स ऑन रिलिजियस इन्टालरेन्स इन इंडिया प्रोवोक आउटरेज.”
वाशिंगटन पोस्ट फरवरी 06, 2015. ऐकसेस्ड अगस्त 08, 2015

<https://www.washingtonpost.com/news/worldviews/wp/2015/02/06/>

ओबामा’ज़-रिमाक्स-आन-रिलीजियस-इन्टालरेन्स-इन-इंडिया-प्रोवोक-आउटरेज/

हजवार्ड, स्टिग. “दा मीडियाटाईज़ेशन ऑफ रिलिजियन : अ थ्योरी ऑफ दा मीडिया ऐज ऐन
एजेंट ऑफ रिलिजियस चेंज ! (पेपर प्रेजेंटेट एट 5थ इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन मीडिया, रिलिजियन
एंड कल्चर: मीडिएटिंग रिलिजियन इन दा कांटेक्स्ट ऑफ मल्टीकल्चरल टेंशन !

दा सिग्तुना फाउंडेशन स्टॉकहोल्म/सिग्तुना/उप्पसला, स्वीडन, 6-9 जुलाई, 2006 पेपर सेशन
(8): पॉपुलर कल्चर एंड पॉपुलर रिलिजियन)

“इन्क्रीजिंग हिन्दू प्रोटैस्ट अगेंस्ट एंटी हिन्दू फिल्म “पीके” ! हंड्रडज़ ऍफ आई आर लोज्ड !
डिमांड टू बैन एंड बायकाट दा फिल्म” *हिन्दूएगजिस्टेन्स* ! दिसम्बर 29, 2014. ऐकसेस्ड

<http://hinduexistence.org/2014/12/29/increasing-hindu-protest-against-anti-hindu-film-पीके-हंड्रडज़-ऍफआईआर-लोज्ड-डिमांड-टू-बैन-दा-फिल्म/>

कादरी एंड मुफ्ती : फिल्मज़ एंड रिलिजियन: एन एनालिसिस ऑफ आमिर खान’ज़ PK !

प्रकाशित DigitalCommons@UNO

लिरिक्स एंड मीनिंग ऑफ दा सॉंग ! *बालीमीनिंग* नवम्बर, 2014. ऐकसेस्ड अप्रैल 19, 2015

<http://www.bollymeaning.com/2014/11/>

भगवन-पीके-लिरिक्स-मीनिंग-सोनुनिगम ! html#sthash.b3bz2TyR.dpuf

मजुमदार, रंजनी, ! “बाम्बे सिनेमा : ऐन आर्काइव ऑफ दा सिटी ” रानीखेत : परमानेंट ब्लैक,
2007.

मेज़्रोफ़िओर, गियानलुका ! “इंडिया : पुअर मुस्लिम्स ‘लेयोर्ड’ इनटू माँस हिन्दू कन्वर्शनज़ बाई
एक्सट्रीमिस्ट्स” आईबीटाइम्स दिसम्बर 10, 2014. ऐकसेस्ड अगस्त 8, 2015

<http://www.ibtimes.co.uk/india-poor-muslims-lured-into-mass-hindu-conversions-byextremists-1478958>

निकी, वी. पी. “आमिरज़ ‘पीके’ कमलज़ ‘विश्वरूपम’ एंड अदर फिल्मज़ दैट फेस्ड थरैटस फ्राम
रिलिजियस फेनेटिक्स.” *आईबीटाइम्स*, दिसम्बर 31, 2014. ऐकसेस्ड अप्रैल 15, 2015

<http://www.ibtimes.co.in/aamirs-PK-kamals-vishwaroopam-other-films-that-facedthreats-religious-fanatics-618916>

“नाट जस्ट विश्वरूपम : अदर फिल्मज़ दैट फेस्ड बैन इन इंडिया” ! *फर्स्टपोस्ट* जनवरी 30, 2013.

ऐकसेस्ड अप्रैल 29, 2015

<http://www.firstpost.com/bollywood/not-justvishwaroopam-other-films-that-faced-bans-in-india-607493.html>

पांडे, विकास ! “ वाई इज़ बालीवुड फिल्म पीके कंट्रोवर्शियल ?” बीबीसी *मोनिटरिंग* दिसम्बर 26, 2014. ऐकसेस्ड अप्रैल, 20, 2015

<http://www.bbc.com/news/>

वर्ल्ड-एशिया-इंडिया-30602809

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

“पीके स्टार्म ; बजरंगदल एक्टिविस्ट्स वेंडालाईजज़ प्रोमिनेंट थियेटर्स इन अहमदाबाद.”

एवार्था, 29 दिसम्बर, 2014. ऐकसेस्ड अप्रैल, 20, 2015

<http://www.evartha.in/english/2014/12/29/pk-storm-bajrang-dal-activists-vandalizesprominent-theatres-in-ahmedabad.html>

“ पीके : वाई राजकुमार हिरानी एक्सप्रेसड ग्रेटीट्युड टू श्री श्री रवि शंकर.” *टाइम्स ऑफ़ इंडिया* जनवरी 7, 2015, ऐकसेस्ड अगस्त 08, 2015

<http://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/hindi/bollywood/news/>

पीके-वाई-राजकुमार-हिरानी-एक्सप्रेसड-ग्रेटीट्युड-टू-श्री-श्री-रवि-शंकर/आर्टिकलशो/45794452.cms

“पोस्टर ऑफ़ पीके.” *बालीवुडलाईफ़*. जुलाई 2014. ऐकसेस्ड

<http://www.bollywoodlife.com/newsgossip/exclusive-aamir-khans-pk-poster-leaks/>

रामासुब्रामणियन, श्रीविद्या ! “अ कान्टेंट एनालाइजज़ ऑफ़ दा पोर्टरयाल ऑफ़ इंडिया इन फिल्मज़ प्रोड्यूसड इन दा वेस्ट.” *रॉउटलेज : टेलर एंड फ्रांसिस ग्रुप : हावर्ड जौर्नल ऑफ़ कम्युनिकेशन* ! (2005), pp243-266. ऐकसेस्ड अप्रैल, 28, 2015

www.cademia.edu/257145/A_Content_Analysis_ofthe_portrayal_of_India

रंगन, भारद्वाज . “ हु इज़ रीएली ओफेन्डड विद पीके ? *दा हिन्दू* जनवरी 2, 2015.
ऐकसेस्ड अप्रैल 20, 2015

<http://www.thehindu.com/opinion/op-ed/comment-on-PKmovie-controversy/article6745645.ece>

प्रकाशित DigitalCommons@UNO

रनप्रीत. “ सेवेन डेडलीयस्ट रायट्स दैट शुक इंडिया.” इंडिया टीवी न्यूज़. नवम्बर 12, 2014.
ऐकसेस्ड अप्रैल 14, 2015

<http://www.indiatvnews.com/news/india/>

सेवेन-डेडलीयस्ट-रायट्स-दैट-शुक-इंडिया-27728.html?page=3

राव, एन भास्कर एंड राघवन, जी. एन. एस.“ सोशल इफेक्ट्स ऑफ़ मासमीडिया इन इंडिया.”
न्यू देहली : ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 1996.

शेखर, निशांत ! ”पीके रोड : ‘मुस्लिम’ आमिर खान हर्दिंग ‘हिन्दू’ सेंटिमेंट्स, डज़ इट मेक
सेन्स? पीके माईट हैव ग्रास्ड बिलियनज़ वर्ल्डवाइड, बट दा मूवी हैज़ इनवाइटड दा रैथ ऑफ़
मैनी रिलिजियस ग्रुप्स.” *इंडियन एक्सप्रेस दिसम्बर 31, 2014.* ऐकसेस्ड

<http://indianexpress.com/article/entertainment/bollywood/pk-row-muslim-aamirkhan-hurting-hindu-sentiments-does-it-make-sense/>

शुक्ला, उमेश ! “येस देयर आर सिमीलैरीटीज़ बीटवीन ‘पीके’ एंड ‘ओह माय गॉड !’, इट इस दा
जॉयन्त्रा.” *आईबीएनलाइव.* जनवरी 11, 2015. ऐकसेस्ड अप्रैल, 29, 2015

<http://ibnlive.in.com/news/yesthere-are-similarities-between-pk-and-oh-my-god-its-the-genre-umeshshukla/522301-8-66.html>

थरूर, ईशान ! “एम्. एफ़ हुसैन, इंडिया’ज़ पिकासो, डाईज़ इन एक्ज़ाईल.” *टाइम मैगज़ीन* जून
9, 2011.

ऐकसेस्ड अगस्त 8, 2015

<http://world.time.com/2011/06/09/m-f-husain-indiaspicasso-dies-in-exile/>

“ टॉप 10 बालीवुड कंट्रोवरशिअल मूवीज.” *टाइम्स ऑफ़ इंडिया* . नवम्बर 22, 2013. ऐकसेस्ड अप्रैल, 29, 2015

<http://timesofindia.indiatimes.com/entertainment/top-lists/Top-10-Bollywood%E2%80%99s-controversial-movies/videos/26200760.cms>

28

जौर्नल आफ रिलिजियन एंड फिल्म वॉल्यूम-20, इशू-1, आर्टिकल-9

<http://digitalcommons.unomaha.edu/jrf/vol20/iss1/9>

वाडिया, एंजेला. “फिल्म, टेलीविज़न एंड रेडिओ प्रोडक्शन : एलेमेंट्स डाइमेंशन्स एंड ट्रेंड्स न्यू देहली : कनिष्का पब्लिशर्स, 2008.

“वाई इज़ देयर सो मच कंट्रोवर्सी ओवर “पीके” बट नाट ऑन ओवर “ओएमजी” वैन बोथ बैश दा रिलिजियस ब्लॉइडनैस इन इक्वेल मईज़र?” कुओरा. 2014. ऐकसेस्ड अप्रैल, 29, 2015.

<http://www.quora.com/>

वाई-इज़-देयर-सो-मच-कंट्रोवर्सी-ओवर-“पीके”-बट-नाट-ऑन-ओवर-“ओएमजी”-वैन-बोथ-बैश-दा-रिलिजियस-ब्लॉइडनैस-इन-इक्वेल-मईज़र.

जूनेन, लिएस्बेत वैन. “फोर ऐपरोचिज़ टू दा स्टडी ऑफ़ मीडिया एंड रिलिजियन.” 2011. ऐकसेस्ड अप्रैल,, 27 2015

<http://www.kent.ac.uk/religionmethods/documents/>

फोर%ऐपरोचिज़%टू%दा%स्टडी%ऑफ़%मीडिया%एंड%रिलिजियन.pdf

प्रकाशित DigitalCommons@UNO, 2